फ़रवरी माह में
समय को समय देना

१ फ़रवरी, २०२५

आत्मीय पाठक,

फ़रवरी २०२५ में प्रवेश करते हुए, वह क्या है जिसे लेकर आप सबसे अधिक उत्साहित हैं? क्या वह आपके हृदय की पूर्णता का अनुभव है? क्या वह भगवान शिव के चन्द्रमा का रहस्यमय आकर्षण है?

मुझे दोनों ही बातें समान रूप से उत्साहित करती हैं, पर मैं चन्द्रमा की बात पर कुछ देर और बने रहना चाहती हूँ। चन्द्रमा और जिसका वह प्रतिरूप है, वे हमेशा से ही मुझे सम्मोहित करते हैं। जैसे कि, हम चन्द्रमा को विभिन्न कलाओं में घटते-बढ़ते देखते हैं और इससे हमें समय के बीतने का एहसास होता है। तथापि, चन्द्रमा सदैव पूर्ण ही है; वह हमेशा ही जगमगाता उज्ज्वल प्रभामण्डल रहता है। उसका बदलता आकार तो एक भ्रम है जो धरती पर हमारी अपनी स्थिति और सूर्य से उसकी दूरी के कारण उत्पन्न होता है।

तो अब, यदि चन्द्रमा की कलाएँ एक भ्रम हैं, तो चन्द्र और सूर्य जैसे आकाशीय पिण्डों पर आधारित, समय की हमारी अवधारणाएँ भी किस हद तक भ्रमित कर देने वाली हैं? हम समय में भेद करके उसे छोटे-छोटे भागों में बाँट देते हैं और उसके अनुसार अपने जीवन की योजना बनाते हैं, परन्तु क्या समय इन भेदों से परे है? या फिर, क्या समय जल के समान है, जिसके भी सम्पर्क में यह आता है, जो भी हम इसमें मिलाते हैं, यह वही रंग ले लेता है, उसी आकार में ढल जाता है?

इस पर विचार करते हुए, मैं आपको बताना चाहती हूँ कि वर्ष २०२५ के लिए श्रीगुरुमाई से सन्देश पाकर मैं उनके प्रति असीमित कृतज्ञता का अनुभव करती हूँ। और हाँ, मुझे निश्चित ही ऐसा लगता है कि गुरुमाई जी ने यह सन्देश *ख़ास तौर पर* मेरे लिए दिया है। यदि आपको भी ऐसा लगता है—तो ठीक है, मैं इसे भी मान लेती हूँ! बहरहाल, मैं इस बात को लेकर उत्सुक हूँ कि जैसे प्रश्न मैंने अभी पूछे, उन पर चिन्तन करने के लिए हमारे पास पूरा साल है।

मेरा तो यह मानना है कि हम मनुष्यों ने समय को जिन भागों में बाँट रखा है, उनमें विशेष ऊर्जाओं की अनुभूति होती है। उदाहरण के लिए, फ़रवरी के माह को ही लें। इस वर्ष, फ़रवरी का माह अमावस्या के ठीक बाद आरम्भ हुआ है, जब चीनी [या चान्द्र] नववर्ष का पन्द्रह दिवसीय उत्सव

मनाया जा रहा है। फिर, १४ फ़रवरी को हम सन्त वैलेन्टाइन दिवस मनाएँगे। यह पूर्णिमा यानी पूर्ण चन्द्र के दो दिन बाद है और यह प्रेमियों व ध्यान-साधकों, दोनों के लिए हमेशा से प्रेम का प्रतीक रहा है। और अन्ततः, २६ फ़रवरी को, जब चन्द्रमा घटते-घटते ज्योतिर्मय नवचन्द्राकार का हो जाएगा तब हम 'रतजगा' करेंगे—महाशिवरात्रि को हम पूरी रात जागकर पूजा-उपासना करेंगे। पञ्चांग के अनुसार यह रात्रि वर्ष की तीन सबसे शुभ रात्रियों में से एक मानी जाती है। इस रात्रि को हम मांगल्य के मूर्तरूप, भगवान शिव के आशीर्वादों का आवाहन करेंगे।

यदि हम इस सिद्धान्त को स्वीकार कर लें कि किन्हीं विशिष्ट लैंस या फ़िल्टर द्वारा समय का अनुभव किया जा सकता है तो मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ कि आप उन लैंस का उपयोग कर, इस माह के दौरान 'समय के समक्ष' में श्रीगुरुमाई द्वारा प्रदान की गई सिखावनियों का अध्ययन करें। फ़रवरी का माह, प्रेम का और भगवान शिव का माह है। यदि आप गुरुमाई जी की सिखावनियों को अहैतुक प्रेम और अहैतुक कृपा के लैंस के माध्यम से देखें तो आप उन सिखावनियों की अपनी समझ को किस प्रकार समृद्ध करेंगे? आपको क्या लगता है कि इस तरह के अध्ययन-क्रम का आरम्भ करके आप क्या-क्या अनुभव करेंगे? फ़रवरी के समापन पर अपनी साधना में आप खुद को कहाँ देखना चाहते हैं?

जैसे-जैसे आप गुरुमाई जी की सिखावनियों का अध्ययन करते जाएँगे, हो सकता है कि आप पाएँ कि एक धागा है जो उन सभी विषयों को एक-साथ पिरोए हुए है जिनका हम अन्वेषण कर रहे हैं। भारत के शास्त्रों में भगवान शिव को ऐसे महात्यागी के रूप में वर्णित किया गया है जो इस जगत-प्रपंच के विरक्त साक्षी हैं। तथापि, वे देवी पार्वती से विवाह भी करते हैं, और देवी के प्रति उनके विशुद्ध प्रेम का, उनके समर्पण का विलक्षण वर्णन व्यापक रूप से प्रसिद्ध है। इतना ही नहीं, भगवान शिव अपनी भक्तवत्सलता के लिए जाने जाते हैं। यदि श्रद्धा-भक्ति से एक बार भी मन्त्र का उच्चारण किया जाए तो उसका भी फल देने वाले भोलेनाथ हैं वे। प्रेम, प्रेम को पहचान लेता है; मन्त्र अपने स्रोत में लौट जाता है; सब कुछ भगवान शिव के डमरू में से निकलने वाले उस आदिनाद में समाहित होता है।

और शायद, महात्यागी भगवान शिव के आदर्श का अध्ययन कर हमें इस बात का संकेत मिल सकता है कि हम किस प्रकार समय को, और साथ ही प्रेम को भी अधिक बेहतर रूप से समझें, उसके प्रति हमारा दृष्टिकोण कैसा हो, किस प्रकार हम उसकी ओर बढ़ें। समय [या प्रेम] के साथ जूझने के बजाय, समय [या प्रेम] के साथ सौदेबाज़ी करने के बजाय, यह प्रश्न करने के बजाय कि क्यों ऐसा लगता है कि समय [या प्रेम!] अपना ही रास्ता बनाने पर तुला हुआ है, क्या हो यदि हम समय को वैसे ही स्वीकार करें जैसा वह है, और फिर यथासम्भव सर्वोत्कृष्ट रीति से उसका उपयोग

करने में रत रहें? क्या हो यदि हम प्रेम को उसी रूप में प्रकट होने दें जैसे वह प्रकट होना चाहता है? शायद तब, जब चन्द्रमा की ही तरह समय भी अपने आपमें निर्मल और निष्पक्ष बना रहता है, जब हमारा प्रेम आसक्ति और अनासक्ति के बीच झूलता रहता है, तब भी हम यह जान जाएँगे कि समय हमारे साथ है, इसका क्या अर्थ है। हम यह जान जाएँगे कि हममें से हर कोई प्रेम के साथ है, इसका क्या अर्थ है।

आदर सहित,
ईशा सरदेसाई

© २०२५ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।